International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.6 July – August 2023

# स्वामी विवेकानंद और गुरु रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

**सुवाष शुक्ला[1], डॉ. सुनील कुमार[2]**

*[1] शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र , लार्ड्स विश्वविद्यालय अलवर (राजस्थान)*

*[2]शोध निर्देशक, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग , लार्ड्स विश्वविद्यालय अलवर (राजस्थान)*

***Corresponding Author - सुवाष शुक्ला***

**DOI - 10.5281/zenodo.8278585**

***संक्षेप:***

*रवींद्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानंद की गिनती दुनिया के महानतम शिक्षाविदों में होती है। उनके द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के दर्शन पूरी मानवता के लिए बहुत महत्व रखते हैं। वे आधुनिक भारत में शिक्षा के महत्व से अच्छी तरह वाकिफ थे। उन्होंने अपने उत्कृष्ट व्यक्तित्व से न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व को आलोकित किया।*

*रवींद्रनाथ टैगोर भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे। वह एक कवि दार्शनिक संगीतकार लेखक और शिक्षाविद थे। स्कूल में अपने स्वयं के अनुभव से वह आश्वस्त था कि कक्षा की चार दीवारें छोटे बच्चों की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करती हैं। उनके लिए पारंपरिक स्कूल एक जेल घर की तरह था। उनके अनुसार उच्चतम शिक्षा वह है जो हमें न केवल जानकारी देती है बल्कि हमारे जीवन को सभी अस्तित्वों के साथ सद्भाव में बनाती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली हमें कल्पना शक्ति को विकसित करने की अनुमति नहीं देती है। हमारी शिक्षा प्रणाली आनंदहीन है। छोटेछोटे बच्चे टन किताबों के बोझ तले दबे होते हैं।*

*"स्वामी विवेकानंद ने महसूस किया था कि जीवन के वैज्ञानिक और यांत्रिक तरीके पर अत्यधिक जोर मनुष्य को मशीन की स्थिति में तेजी से कम कर रहा है। नैतिक और धार्मिक मूल्यों की अवहेलना की जा रही है और सभ्यता के मूलभूत सिद्धांतों की उपेक्षा की जा रही है। स्वामी विवेकानंद शिक्षा के माध्यम सेइन सभी सामाजिक और वैश्विक बुराइयों का समाधान चाहते हैं। स्वामी विवेकानंद ने अपनी शिक्षा योजना में सावधानीपूर्वक उन सभी का अध्ययन किया है जो व्यक्ति के शरीर मन और आत्मा के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक हैं। उनके अनुसार देश के सांस्कृतिक मूल्यों को शिक्षा के पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग बनाना चाहिए।"*

***मुख्यषब्द :- स्वामीविवेकानंद , गुरूरवींद्रनाथ , शैक्षिक।***

प्रस्तावना:

रवींद्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानंद दोनों को दुनिया के महानतम शिक्षाविदों में गिना जाता है। उनके द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के दर्शन पूरी मानवता के लिए बहुत महत्व रखते हैं। वे आधुनिक भारत में शिक्षा के महत्व से अच्छी तरह वाकिफ थे। उन्होंने अपने उत्कृष्ट व्यक्तित्व से न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व को आलोकित किया।

प्रगतिशील पश्चिमी देशों से निकलने वाले सभी लाभकारी प्रभाव के लिए खुले रहते हुए वे अपने मूल में राष्ट्रवादी थे। वे चाहते थे कि भारत पश्चिमी विज्ञान और प्रौद्योगिकी को सीखेए राजनीतिक और आर्थिक

व्यवस्था को अपनाए लेकिन अपने पूर्वी बंधन और पारंपरिक ज्ञान को कभी नहीं भूले। हमारे पास आध्यात्मिक ज्ञान का विशाल भंडार है। रवींद्रनाथ और विवेकानंद पश्चिम और पूर्व में जो सबसे अच्छा है उसका एक सामंजस्यपूर्ण संश्लेषण चाहते थे। हमें भीख का कटोरा लेकर पश्चिम की यात्रा नहीं करनी चाहिए बल्कि अपनी संस्कृति में जो सबसे अच्छा है उसकी भेंट के साथ जाना चाहिए। रवींद्रनाथ और विवेकानंद दोनों ही उपनिषदों के गहरे जानकार थे। तथा ये शाश्वत रूप से आध्यात्मिक रचनाएँ हमें सिखाती हैं कि ब्रह्म जो अंततः वास्तविक है और वह शुद्ध चेतना है शु अस्तित्व और शुद्ध आनंद जिस के कारण हम जो कुछ भी करते हैं उसे ब्रह्म की प्राप्ति के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए अर्थात सत्य की प्राप्ति बढ़ी हुई और विस्तारित चेतना और आनंद है। शिक्षा जीवन की तैयारी है और यह तैयारी तभी सफल होती है जब जीवन सत्य सौंदर्य और अच्छाई की कभी न खत्म होने वाली खोज बन जाए। शिक्षा समाज के जीवन दर्शन और संस्कृति के आलोक में युवाओं के व्यवहार को संशोधित करने के लिए एक सचेत और जानबूझकर की गई गतिविधि है। प्राचीन भारत की शिक्षा सद्गुणों आदर्शों मूल्यों मानदंडों और व्यवहार के मानकों पर आधारित थी जो शिक्षा की अवधारणा में ही निहित थे। शिक्षा जीने के लिए नहीं बल्कि सार्थक जीवन के लिए थी। यह प्रकृति में धर्मनिरपेक्ष और आध्यात्मिक था।

**भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली:**

प्राचीन भारतीय सभ्यता विश्व की सर्वाधिक रोचक तथा महत्त्वपूर्ण सभ्यताओं मेंसे एक है। इस सभ्यता के समुचित ज्ञान के लिए हमें इसकी शिक्षा पद्धति का अध्ययन करना आवश्यक हैए जिसने इस सभ्यता को चार हजार वर्षों से भी अधिक समय तक सुरक्षित रखा। प्राचीन भारतीयों ने शिक्षा को अत्यधिक महत्व प्रदान किया। भौतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान तथा विभिन्न उत्तरदायित्वों के विधिवत निर्वाह के लिए शिक्षा की महती आवश्यकता को सदा स्वीकार किया गया जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को आलोकित करते हुए उसे सही दिशा-निर्देश देता है। प्राचीन भारतीयों का यह दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा द्वारा प्राप्त एवं विकसित की गई बुद्धि ही मनुष्य की वास्तविक शक्ति होती हैं। शिक्षा व्यक्ति के शारीरिकए मानसिक बौद्धिक तथा आध्यात्मिक उत्थान का सर्वप्रमुख माध्यम था।

भारतीय शिक्षा प्रणाली का इतिहास ना केवल शिक्षा का इतिहास है बल्कि यह भारतीय सभ्यता का भी इतिहास है। भारतीय शिक्षा प्रणाली का इतिहास समृद्ध विरासत से पूर्ण है। भारत ऐतिहासिक काल में विश्व गुरु कहलाता था। यहां शिक्षा व्यवस्था प्रारंभ से ही थी। तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय को शिक्षा प्रणाली के सर्वप्रथम उदाहरण के रुप में देखा जाता है। 5 वीं शताब्दी ईसा पूर्व से ही शिक्षा के रुप में विश्वविद्यालयों का निर्माण शुरु हो चुका था। हालांकि भारत में शिक्षा का इतिहास नालंदा से शुरू नहीं हुआ

हैए लेकिन यह प्राचीन भारत में सबसे अच्छी तरह से प्रलेखित संस्थानों में से एक है। व्यापार और अन्वेषण के कारण पारंपरिक तरीके से शिक्षण को धीरे-धीरे आधुनिक शिक्षा प्रणाली से बदल दिया गया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली 20 वीं शताब्दी में अंग्रेजों द्वारा शुरू की गई थी। जिसमें पश्चिमी शैली और पश्चिमी सामग्री एवं प्रभाव को देखा जा सकता है। भारत में विश्वविद्यालयों की स्थापना बॉम्बेए कलकत्ता और मद्रास में की गई जो ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज के तर्ज पर तैयार किए गए थे। 1961 में नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग एनसीईआरटी की स्थापना एवं 1964 में कोठारी आयोग के नाम से जाने जाने वाले शिक्षा आयोग के साथ भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार हुआ।

वैदिक युग में शिक्षा की गुरुकुल पद्धति प्रचलित थी जिसमें गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त की जाती थी। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य उपनयन संस्कार के बाद गुरु के आश्रम में प्रवेश करते थे जहाँ लगभग चौबीस वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करते थे। वैदिक युग में शिक्षा का माध्यम मौखिक था अर्थात् गुरु द्वारा कहे गये वचनों को छात्रों द्वारा बार-बार दोहराया जाता था। वैदिक शिक्षा केन्द्रों में विद्यार्थी वेद तर्कशास्त्र नीतिशास्त्र ब्रह्मविद्या आदि का अध्ययन करते थे। प्राचीन भारतीय समाज में गुरु को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया ग्या है। गुरु-शिष्य अत्यन्त मधुर एवं सौहार्दपूर्ण थे। वैदिक युग में आचार्य तथा शिष्य के मध्य सीधा संबंध होता था।

प्राचीन भारतीय शिक्षा में शुल्क प्रदान करने का कोई निश्चित नियम नहीं था। प्रायः शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी। शिक्षा प्रदान करना विद्वानों एवं आचार्यों का पुनीत कर्त्तव्य माना जाता था। परंतु राज्य तथा समाज का यह कर्तव्य था कि वह अध्ययन-अध्यापन करने वाले विद्वानों के निर्वाह की उचित व्यवस्था करे। इस उद्देश्य से शासक तथा कुलीन लोग शिक्षण संस्थाओं को भूमि तथा धन आदि दान में देते थे। वैदिक युग में आधुन्कि युग की भाँति परीक्षा लेने तथा उपाधियाँ प्रदान करने की प्रथा का अभाव था। विद्यार्थी गुरु के सीधे सम्पर्क में रहते थे। अध्ययन की समाप्ति पर समावर्तन नामक संस्कार आयोजित होता था। वहाँ छात्र से विद्वत मण्डली द्वारा उसके अध्ययन से संबंधित गूढ प्रश्न पूछे जाते थे। तदनन्तर वह स्नातक बन जाता था।

वैदिक युग में स्त्रियों को भी शिक्षा प्रदान की जाती थी। गार्गी लोपामुद्रा मैत्रेयी आदि विदुषी महिलाओं द्वारा वादविवाद में भाग लेना एवं विभिन्न ऋचाओं की रचना इसका प्रमाण है। उत्तर वैदिक युग में ब्राह्मण ग्रंथ लिखे गये तथा ये शिक्षा का विषय बन गये। उपनिषद तथा सूत्रों के युग में वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण पर बल दिया गया। वैदिक साहित्य के अध्ययन को सरल बनाने के निमित्त छः वेदांगों की रचना हुई। सूत्र युग के अंत तक आते आते वैदिक साहित्य का अध्ययन कम हो गया तथा उसके स्थान पर अन्यान्य विषयों जैसे दर्शन धर्मशास्त्र महाकाव्य व्याकरण खगोल विद्या मूर्तिकला वैद्यक पोत निर्माण कला आदि का समावेश हो गया। धार्मिक तथा लौकिक विषयों की शिक्षा में समन्वय स्थापित किया गया। इस युग के स्नातक वेदों तथा 18 शिल्पों में निपुण होते थे।

इस कला में भी शिक्षा की पद्धति मौखिक ही थी। कण्ठस्थ करने की विधि पदपाठए क्रमपाठ जटापाठ और घनपाठ पर आधारित थी।

बुद्ध कालीन शिक्षा के विषय में जानकारी प्राप्त करने के महत्वपूर्ण स्रोत पाली ग्रंथ है। त्रिपिटकों में गुरु शिष्य संबंध शिक्षा के विषय अध्ययन-अध्यापन का ढंग शुल्क एवं दक्षिणा जैसे शिक्षा के विभिन्न आयामों पर विचार किया गया है। बौद्ध धर्म में चरित्र पर विशेष बल दिया गया है। बौद्ध शिक्षा के तीन महत्वपूर्ण लक्षण बताये गये हैं 1 चारित्रिक 2 बौद्धिक एवं 3 आध्यात्मिक बुद्ध काल तक भारत में लेखन का पूर्ण विकास हो चुका था। किन्तु शिक्षा अधिकांशतः मौखिक ही थी। बुद्ध काल में वैदिक साहित्य के अध्ययन की लोकप्रियता कम हो गई तथा साहित्यिक अध्ययन के साथ-साथ व्यवसाय उद्योग चिकित्सा आखेट हस्तविद्या पशु भाषा विज्ञान विधि सैन्य विज्ञान शिल्प आदि की शिक्षा दी जाने लगी।

मौर्य काल तक आते - आते शिक्षा का स्वरूप पूर्णतः बुद्ध काल के अनुरूप हो गया। मौर्यकाल में साधारण जनता की भाषा पाली थी तथा संस्कृत शिक्षित समुदाय तथा साहित्य की भाषा थी। मौर्यकाल में तक्षशिला शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र था जहाँ सभी विषयों की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा का माध्यम संस्कृत था तथा ब्राह्मी तथा खरोष्ठी दोनों लिपियों का प्रयोग किया जाता था।

गुप्तकाल में शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। गुरु अपने शिष्यों को व्यक्तिगत रूप से शिक्षा देते थे। आचार्य प्रमुख धर्म स्थानों तीर्थों नगरों एवं आश्रमों में निवास करते थे। दक्षिणा राजकीय सहायता आदि से आचार्यों का जीवन निर्वाह होता था। मथुरा उज्जयिनी वाराणसी पाटलिपुत्र वल्लभी पद्मावती एवं अयोध्या आदि प्रमुख शिक्षा केन्द्र गुप्तकाल में थे।

वेद शिक्षा के मुख्य पाठ्य विषय थे। इनके अतिरिक्त वेदांग व्याकरण पुराण न्याय मीमांसा धर्मव्यवहार आदि भी पाठ्य विषय थे। याज्ञवल्क्य ने वर्णन किया है कि विद्यार्थी के ऊपरी वस्त्र मृगचर्म का और अधोवस्त्र सण या ऊन का होता था उच्च शिक्षण संस्थाओं को घटिकाष् कहते थे। ब्राह्मण व क्षत्रियों में शिक्षा का अधिक प्रचार था। शूद्रों की शिक्षा का प्रबन्ध नहीं था। स्त्री शिक्षा भी कम होती जा रही थी। लिपिशाला प्रारंभिक शिक्षण संस्थाय प्रायः सभी गाँवों में होती थी इन प्रारम्भिक शिक्षकों को द्वारकाचार्य कहते थे। प्राचीन साहित्य में कुछ आश्रमों के उल्लेख भी मिलते हैं जैसे महर्षि भारद्वाज का आश्रम मालिनी नदी के तट पर कण्व हिमालय पर व्यास का आश्रम रामायण में चित्रकूट में वाल्मीकि का आश्रम। छठी शताब्दी ईसापूर्व में बौद्ध धर्म के अन्तर्गत विहारों को केन्द्र बनाकर शिक्षा केन्द्रों का विकास हुआ जैसे कपिलवस्तु का निग्रोधाराम विहार वैशाली का आम्रवन विहार तथा राजगृह का बेलुवन विहार श्रावस्ती में अनाथ पिंडक ने जेतवन विहार का निर्माण करवाया था। सातवीं सदी में भी उत्तर भारत में अनेक विहार थे कन्नौज में प्रसिद्ध मद्र विहार थे। कालांतर में मंदिरों विहारों मठो के अलावा शिक्षा केन्द्रों के रूप में अनेक विश्वविद्यालय स्थापित

हुए जैसे-तक्षशिला काशी नालंदा विक्रमशिला वल्लभी कांची एवं उदयन्तपुर आदि के बाद जहाँ हजारों देशी तथा विदेशी विद्यार्थी दूर-दूर से आकर शिक्षा प्राप्त करते थे। मध्यकाल में विदेशी मुस्लिम आक्रांताओं ने यहाँ के इन वृहद शिक्षा केन्द्रों को नष्ट कर दिया।

**प्राचीन भारतीय शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य:**

विभिन्न ग्रंथों में शिक्षा से संबंधित जो उल्लेख मिलते हैं उनके आधार पर हम शिक्षा के उद्देश्यों तथा आदर्शों की जानकारी कर सकते हैं। इन्हें इस प्रकार रखा जा सकता है -

**चरित्र का निर्माण :** भारतीय शास्त्रों में सच्चरित्रता को बहुत महत्व दिया गया है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करना था। विद्यार्थी को व्यक्तित्व के विकास का पूरा अवसर प्रदान करना था जिससे विद्यार्थी के मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास आत्मसम्मान आत्मसंयम आत्मविश्वास विवेकशक्ति न्यायशक्ति आदि गुणों का विकास हो।

**नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का ज्ञान शिक्षा का उद्देश्य:** व्यक्ति को नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का बोध कराकर उसे सुयोग्य नागरिक बनाना भी था।

**सामाजिक सुख तथा कौशल की वृद्धि :** शिक्षा का उद्देश्य केवल संस्कृति अथवा मानसिकता तथा बौद्धिक शक्तियों को विकसित करना नहीं था बल्कि इनका उद्देश्य लोगों को विभिन्न उद्योगों व्यवसायों आदि में दक्ष बनाना था।

**संस्कृति का संरक्षण तथा प्रसार:** शिक्षा संस्कृति के परिरक्षण तथा परिवर्धन का प्रमुख माध्यम है। इसी के द्वारा प्राचीन संस्कृति वर्तमान में जीवित रहती है तथा पूर्वकालिक परम्पराओं में जीवनी शक्ति आती है।

**निष्ठा तथा धार्मिकता का संचार :** भारत की प्राचीन संस्कृति धर्मप्राण रही है। अतः शिक्षा पद्धति भी धर्म से प्रभावित थी तथा उसका एक प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में निष्ठा एवं धार्मिकता की भावना जाग्रत करना था।

**रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन परिचय:**

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मईए 1861 को कलकत्ता में जोरासांको हवेली में देवेंद्रनाथ टैगोर और शारदा देवी के तेरह बच्चों में से सबसे छोटे बेटे के रूप में हुआ था। इनके पिता देबेंद्रनाथ टैगोर ब्रह्म समाज के एक नेता थे। इनके दादा द्वारकानाथ टैगोर एक अमीर जमींदार और समाज सुधारक थे। इनका पालन-पोषण मुख्य रूप से नौकरानियों और नौकरों द्वार किया गया था क्योंकि उनके पिता ने बडे पैमाने पर यात्रा की थी और उनकी छोटी सी उम्र में ही उनकी माँ का निधन हो गया था।

रवीन्द्रनाथ टैगोर बंगाल पुनर्जागरण में एक युवा प्रतिभागी थे। जिसमें उनके परिवार ने सक्रिय रूप से भाग लिया था। वह एक बाल विलक्षण भी थे। उनको बचपन से ही कविता लिखने का शौक था। उन्होंने आठ साल की उम्र में ही कविता लिखना और प्रकाशित करना प्रारंभ कर दिया था। जब वे सोलह वर्ष के थे तब

उन्होंने छद्म नाम ''भानुसिम्हा" से कविता लिखना शुरू किया।

उन्होंने कालिदास की शास्त्रीय कविता को पढ़कर प्रेरणा प्राप्त की और अपनी खुद की शास्त्रीय कविताएं लिखना शुरू कर दिया। उन्हें कुछ अन्य प्रेरणाएँ उनके भाइयों और बहनों से मिलीं। उनके बड़े भाई द्विजेंद्रनाथ एक कवि और दार्शनिक थे। उनके भाई सत्येंद्रनाथ एक उच्च सम्मानजनक स्थिति में थे।

उनकी बहन स्वर्णकुमारी एक प्रसिद्ध उपन्यासकार थीं। टैगोर काफी हद तक होम-स्कूली थे और उन्हें उनके भाई-बहनों ने जिम्नास्टिकए मार्शल आर्ट कला शरीर रचना विज्ञान साहित्य इतिहास और गणित के क्षेत्र में प्रशिक्षित किया था। 1873 में उन्होंने अपने पिता के साथ कई महीनों तक देश का भ्रमण किया। इस यात्रा के दौरान उन्होंने कई विषयों पर ज्ञान अर्जित किया।

रवींद्रनाथ टैगोर की प्रारंभिक शिक्षा सेंट जेवियर नामक स्कूल कोलकाता में हुई। टैगोर कभी भी औपचारिक शिक्षा के प्रशंसक नहीं थे और इसी कारण उन्हें अपने स्कूल में जाने में कोई रुचि नहीं थी। इनके पिता देवेन्द्रनाथ टैगोर समाज सुधारक एवं समाजसेवी थे इसीलिए वह रवीन्द्रनाथ को बैरिस्टर बनाना चाहते थे। परन्तु इनको साहित्य में रूचि में थी। वर्ष 1878 में उनको कानून के अध्ययन के लिए ब्राइटन इंग्लैंड भेजा गया तथा उनका लंदन के यूनिवर्सिटी कॉलेज में दाखिला करवाया गया। लेकिन उनकी बैरिस्टर की पढ़ाई में कोई रुचि नहीं थी। वे शेक्सपियर के कई नाटकों का अध्ययन तथा अंग्रेजी आयरिश और स्कॉटिश साहित्य और संगीत के मूल सिद्धांतों का अध्ययन करने के बाद 1880 में अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़कर ही भारत वापस लौट आए।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की शादी 9 दिसंबरए 1883 में मृणालिनी देवी से हुइ जब वह सिर्फ 10 साल की थीं। उनके पांच बच्चे हुए।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1901 में शांतिनिकेतन आश्रम चले गए वहां उन्होंने उपनिषदों से पारंपरिक ''गुरु-शिष्य'' शिक्षण विधियां पर आधारित एक प्रायोगिक स्कूल की स्थापना की। उनका प्रकृति साथ विशेष लगाव था इसलिए शान्तिनिकेतन में उन्होंने प्राकृतिक माहौल बनाया और सघन पेड़-पौधों के बीच पुस्तकालय का निर्माण कराया। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1921 में विश्वभारती विश्वविद्यालय् की स्थापना की। उनको यह विश्वास था कि यह शिक्षण के प्राचीन तरीके अंग्रेजों द्वारा प्रदान की गई आधुनिक शिक्षा प्रणाली की तुलना में इससे छात्रों को अधिक फायदा होगा। परन्तु उसी समय उनकी पत्नी और उनके दो बच्चों की मृत्यु हो गई। जिससे टैगोर व्याकुल हो गए।

**रवींद्रनाथ टैगोर की शिक्षा की अवधारणा:**

रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसार शिक्षा हमें धूल के बंधन से मुक्त करती है और हमें वस्तुओं से नहीं बल्कि आंतरिक प्रकाश से शक्ति से नहीं बल्कि प्रेम से सत्य को अपना बनाकर और उसे अभिव्यक्ति देकर धन देती है। टैगोर ठीक ही कहते हैं उच्चतम शिक्षा वह होती है

जो न केवल हमें जानकारी देती है बल्कि हमारे जीवन को सभी अस्तित्वों के अनुरूप बनाती है। टैगोर हमेशा बच्चो की स्वतंत्रता पर जोर देते हैं। वह बच्चों को स्कूलों और उबाऊ शिक्षा से मुक्त करना चाहते थे। इसके लिए वे स्वतंत्रता और शिक्षा के खुले वातावरण के प्रावधान के पच्छधर थे। वह कहते हैं बच्चो को एक पक्षीयो की तरह मुक्त होना चाहिए जो बिना किसी बाधा के विशाल आकाश में उड़ते है। स्कूल में अपने स्वयं के अनुभव से वे आश्वस्त थे कि कक्षा की चार दीवारें छोटे बच्चों की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करती हैं। उनके लिए पारंपरिक स्कूल एक जेल घर की तरह था। उनके अनुसार शिक्षा जीवन के उद्यम का एक स्थायी हिस्सा है। यह छात्रों की अज्ञानता के रोग को ठीक करने के लिए एक दर्दनाक उपचार की तरह नहीं है। बल्कि यह स्वास्थ्य का कार्य है। उनके मन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। टैगोर उस तरीके के आलोचक थे जिसमें शिक्षा संरचना को रोजगारोन्मुखी बनाया गया था जिसका अर्थ रोटी और मक्खन की कमाई का अंत था। टैगोर ने कहा शुरुआत से ही गाँव के लोगों को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि वे अच्छी तरह से जान सकें कि जन कल्याण का क्या मतलब है और वे अपनी आजीविका कमाने के लिए हर तरह से व्यावहारिक रूप से कुशल बन सकते हैं। टैगोर का शैक्षिक दर्शन प्रकृति और जीवन से सीख रहा था। विवेकानंद की तरह टैगोर ने भी तपस्या और साधना को बहुत महत्व दिया। शिक्षा में यह जीवन में वास्तविक शिक्षा के साधन के रूप में ब्रह्मचर्य की अप्रत्यक्ष व्याख्या है।

**शिक्षा का उद्देश्य:**

विवेकानन्द की भाँति टैगोर ने भी इस बात पर बल दिया कि शिक्षा का उद्देश्य सर्वात्कृष्ट व्यक्तित्व वाला होना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व के सर्वांगीण सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए होना चाहिए। सामंजस्यपूर्ण विकास की यह स्थिति पूर्ण मनुष्यता की स्थिति है। शिक्षा के क्षेत्र में टैगोर की मौलिकता उनके उद्देश्य में नहीं बल्कि गतिविधियों के चयन में निहित है। उन्होंने गतिविधियों का एक सेट निर्धारित किया ताकि बच्चे मानव व्यक्तित्व की जैविक पूर्णता स्वरोजगार के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता और मानव संकायों के विकास पर विचार कर सकें। कुछ प्रमुख गतिविधियाँ और शर्तें हैं-

मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा पाठ्य पुस्तकों के अलावा मुफ्त पढ़ने की व्यवस्था। परीक्षा के लिए नहीं बल्कि आनंद के लिए। काम करने की आज़ादी सादगी का अभ्यास तपस्या लेकिन गरीबी नहीं स्वावलंबन अनुशासन कॉपरिट जीवन अतिथि बुजुर्गों और महिलाओं का सम्मान प्रकृति शिक्षक और समाज के साथ निकट संपर्क। सामान्य विषयों को छोड़कर बागवानी शिल्प संगीत नृत्य नाटकों में खेलों में भागीदारी दैनिक प्रार्थना परिसर की सफाई और निर्वाचित छात्रों की भागीदारी। तथा उनहोने स्वशासन को पूर्ण पुरुषार्थ की सीढ़ियाँ कहा हैं। टैगोर के लिए शिक्षा का उद्देश्य आर्थिक लाभ के विपरीत जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मानव द्वारा निर्मित साधन

होना चाहिए। टैगोर ने विभिन्न अवसरों पर शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों पर जोर दिया।

रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसारए शिक्षा की वर्तमान प्रणाली विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और कुछ लोगों को भौतिक सुख प्रदान करती हैं। लेकिन यह उस शांति और आनंद को लाने में विफल रही है। जिसके लिए हम सभी प्रयास कर रहे हैं। इसका कारण हमारी शिक्षा व्यवस्था की खामियां हैं।

''विश्वभारती'' टैगोर के शिक्षा के मॉडल का सबसे अच्छा उदाहरण है। उनके लिए केवल सामंजस्यपूर्ण विकास ही उचित विकास सुनिश्चित करता है और आंतरिक आनंद की ओर ले जाता है। जो स्वरोजगार के अवसर पैदा करने में मदद करता है। और उचित मूल्य प्रणाली विकसित करने में मदद करता है जो बेईमानी भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसी सामाजिक बुराइयों को मार सकता है।

भारत में शिक्षा पर कोठारी आयोग की रिपोर्ट में भी रवींद्रनाथ टैगोर का प्रभाव देखा जा सकता है। टैगोर के विचार में शिक्षा का उच्च उद्देश्य वही था जो किसी व्यक्ति के जीवन का है जो पूर्णता को प्राप्त करना है।

**टैगोर के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य को निम्न भागो के रूपो में प्रस्तुत किया गया है:-**

**शारीरिक विकास**: टैगोर के अनुसार स्वस्थ मन के लिए स्वस्थ शरीर आवश्यक है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य बच्चे का शारीरिक विकास है। उन्होंने शारीरिक विकास के लिए जरूरी होने पर कुछ समय के लिए शिक्षा छोड़ने की सलाह दी। टैगोर ने शारीरिक विकास के लिए एक स्वस्थ आहार की आवश्यकता पर बल दिया यह दावा करते हुए कि व्यायाम और खेल पेड़ों पर चढ़ने तालाबों में गोता लगाने फल लेने और प्रकृति माँ के खिलाफ कई अन्य पापों में संलग्न होने जैसी गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

**मानसिक विकास**: टैगोर के अनुसार वास्तविक शिक्षा लोगों को शारीरिक रूप से जानने का प्रयास कर रही है। इससे न केवल कुछ जानकारी प्राप्त होती है। बल्कि ज्ञान की क्षमता भी बढ़ती है जो कक्षा के व्याख्यानों से नहीं हो सकती। उनका मानना था कि ज्ञान केवल उन परिस्थितियों में सीधे प्राप्त किया जा सकता है जो दैनिक जीवन के लिए प्रासंगिक हैं। इसके लिए युवा को बाहरी गतिविधियों में शामिल होने के अधिक से अधिक अवसर होने चाहिए।

**नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास**: एक आदर्शवादी होने के नाते टैगोर ने जोर देकर कहा कि नैतिक और आध्यात्मिक विकास शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने विभिन्न नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों पर लिखा है और उन्होंने इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आंतरिक दृढ़ता आत्म नियंत्रण धैर्य और ज्ञान की आवश्यकता पर जोर दिया है।

**समस्त शक्तियों का विकास**: टैगोर के अनुसार शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य बच्चे की गुप्त क्षमताओं को

जगाना है। प्रसिद्ध व्यक्तिवादी टैगोर। इस प्रकार उन्होंने व्यक्ति के संपूर्ण विकास पर अत्यधिक बल दिया। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति के साथ सम्मान और स्वतंत्रता के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए। इसके अलावा उन्होंने सोचा कि शिक्षा लोगों को मानसिक स्वतंत्रता प्रदान करे ताकि वे किताबी जानकारी प्राप्त करने के अलावा अन्य तरीकों से स्वायत्त रूप से विकसित हो सकें।

**सामाजिक विकास**: टैगोर समाजवादी होने के साथ-साथ व्यक्तिवादी भी थे। उन्होंने समाज और सामाजिक कर्तव्य को उतना ही महत्व दिया जितना उन्होंने व्यक्ति और उसके व्यक्तित्व के विकास पर रखा। उनका मानना था कि व्यक्ति को आध्यात्मिक संतुष्टि के लिए सामाजिक विकास आवश्यक है। इस प्रकार उन्होंने शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को ऐसे सामाजिक बंधन से जोड़ने की कोशिश की ताकि वे सामाजिक विकास के लिए काम कर सकें। नतीजतन उन्होंने अपनी फर्म के अंदर टीम वर्क और सार्वजनिक सेवा को प्राथमिकता दी।

**राष्ट्रीयता का विकास**: एक देशभक्त होने के नाते रवींद्रनाथ टैगोर का मानना था कि शिक्षा राष्ट्रीय जागृति लाने का सबसे प्रभावी तरीका है। उन्होंने अपने विचारों शब्दों और कविता से दूसरों में देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रेरित किया।

**अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास**: टैगोर की राय में शिक्षा का अंतिम लक्ष्य छात्र में वैश्विक जागरूकता की भावना पैदा करना है। उन्होंने सार्वभौमिक सद्भाव लाने की मांग की। यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चा विश्व समाज की उन्नति के लिए काम करना जारी रखेगा वह चाहता था कि बच्चा शिक्षा के माध्यम से इसके लिए बाध्य हो।

**टैगोर के अनुसार शिक्षण की विधियाँ:**

टैगोर ने तर्क दिया कि शिक्षा को जीवन से पहले आना चाहिए और तत्कालीन उबाऊ शिक्षा प्रणाली की कृत्रिमता पर हमला किया जैसे कि मौजूदा पाठ्यक्रम। इसे जीवन की वास्तविकता पर आधारित होना चाहिए। इस अर्थ में धारणा यह थी कि एक बच्चे की वृद्धि उसके हितों और झुकाव के अनुसार होनी चाहिए। ऐसा करने के लिए उसके पास व्यक्तिगत प्रयास के माध्यम से स्रोतों से सीधे सीखने का अवसर होना चाहिए। नतीजतन टैगोर ने अपने प्रसिद्ध स्कूल शांतिनिकेतन में नीचे सूचीबद्ध गतिविधियों को लागू किया क्योंकि उन्हें लगा कि वे बच्चों की शिक्षा के लिए उपयुक्त हैं।

**भ्रमण के समय पढ़ना**: टैगोर के अनुसार एक बच्चे का मन और शरीर कक्षा में मिलने वाले निर्देश से अप्रभावित रहता है। ऐसा हास्यास्पद निर्देश बेकार है। यात्रा के दौरान बच्चों की मानसिक क्षमताएं जागृत रहती हैं वे टिप्पणी करते थे। परिणामस्वरूप बच्चे विभिन्न विषयों को केवल देखकर ही उनके बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार टैगोर के शब्दों में यात्रा करते समय पढ़ना शिक्षा का आदर्श रूप है।

**वाद,विवाद तथा प्रश्नोत्तर विधि:** टैगोर के अनुसार सच्ची शिक्षा केवल साहित्य के संग्रह के बजाय जीवन और समाज के अध्ययन पर केंद्रित है। उन्होंने एक बार कहा था कि सवाल और जवाब बच्चों को पढ़ाने का सबसे अच्छा तरीका है। इसके अलावा उन्हें विभिन्न प्रकार के मुद्दों को प्रस्तुत किया जाना चाहिए ताकि वे चर्चा कर सकें और जल्दी से समाधान ढूंढ सकें।

**क्रिया विधि:** टैगोर के लिए कार्रवाई की धारणा बहुत महत्वपूर्ण थी। उनका विचार था कि शरीर और बुद्धि दोनों गतिविधि के माध्यम से शक्ति प्राप्त करते हैं। इस वजह से उन्होंने शांति निकेतन के छात्रों के लिए एक या एक से अधिक हस्तशिल्प का अध्ययन करना आवश्यक बना दिया। जब एक नौजवान ने टैगोर से पूछा कि उन्हें निर्देश कब मिल रहा है ''क्या मैं दौड़ सकता हूं तो वे जवाब देते थे बिल्कुल। इससे पता चलता है कि वह कार्रवाई की अवधारणा में कितनी दृढ़ता से विश्वास करते थे। उन्होंने सोचा कि छलांग लगाने पेड़ों पर चढ़ने और फल लेने से बच्चे की थकान दूर हो जाती है। सीखने की उनकी क्षमता में सुधार होता है और उनके अनुभवों का मूल्य बढ़ता है।

**मातृ भाषा द्वारा शिक्षण:**टैगोर की राय में मातृभाषा सबसे सरल प्रकार की शिक्षा है। उन्होंने कहा कि छात्रों को विदेशी भाषा पढ़ाना अन्याय है। इसके अलावा टैगोर ने सभी लोगों के बीच बंधुत्व के विचार का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार पाठ्यक्रम में सभी सभ्यताओं के बारे में जानकारी शामिल होनी चाहिए।

**खेल द्वारा शिक्षण:**टैगोर के अनुसार बच्चों को खेल के माध्यम से शिक्षित किया जाना चाहिए। खेलने के माध्यम से सिखाने का सबसे अच्छा तरीका है क्योंकि बच्चों को खेल पसंद है। एक ही समय में स्वतंत्रता और आनंद को महसूस करें। यह शिक्षा को सुखद और सरल बनाता है।

**स्वानुभव द्वारा शिक्षण:**टैगोर के अनुसार शिक्षा बच्चे के जीवन पर उन्मुख होनी चाहिए क्योंकि शिक्षण इस तरह से किया जाना चाहिए जिससे बच्चे को अपने स्वयं के अनुभवों से सबक लेने की अनुमति मिल सके। शिक्षा नकली होना बंद हो जाती है जब यह वास्तविक जीवन में समझ में आने लगती है।

**स्वामी विवेकानंद का जीवन परिचय:**

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12जनवरी 1863 को मकरसंक्रति के दिन कलकत्ता एक कायस्थ जाति के परिवार में हुए था। इनके पिता जी का नाम विश्वनाथ दत्त को कलकत्ता हाई कोर्ट के प्रसिद्ध वकील थे और मां का नाम भुनेश्वरी देवी जो एक धार्मिक विचार की महिला थी और हिंदू धर्म के प्रति कफि आस्था रखती थी। नरेंद्रको 9 भाई बहन थे। दादा जी का नाम दुर्गाचरण दत्त फारसी और संस्कृत के विद्वान वक्ति थे। वे भी अपने घर परिवार को छोड़कर साधु बन गए।

स्वामी विवेकानन्द जी का बचपन का नाम नरेंद्र दत्त था प्यार से लोग उन्हें नरेंद्र बुलाया करते थे। ये बचपन से अत्यंत कुशाग्र और बुधिमान के साथ बहुत नटखट भी थे। बचपन में अपने सहपाठियों के साथ

बहुत किया करते थेए कभी-कभी मौका मिलने पर अधियापको से भी सरारत करने से नहीं चूकते थे।

उनकी मां धार्मिक विचार की महिला थी इसलिए उनके घर में नियमित रूप से पूजा पाठ होता रहता और साथ ही रामायण गीता महाभारत जैसे पुराणों का पाठ होते रहता था। इस कारण से उन्हें बचपन से ही ईश्वर के प्रति जानने की इच्छा उनके मन में जागृत होने लगा। भगवान को जानने की उत्सुकता में माता पिता कुछ ऐसे सवाल पूछ देते की जानने के लिऐ उन्हे ब्राह्मणों के यहा जाना पडता। 1984 में उन्होंने अपने पिता जी साथ छूट गया और परिवार की सारी जिमेदार उन्ही पर आ गई।

स्वामी विवेकानन्द का प्रारम्भ शिक्षा उनके घर में ही हुआ। 1871 में 8 साल की उम्र में ईश्वर चंद्र विद्यासागर के मेट्रोपोलिटन सस्थान में नामांकन करवाए जहां से उन्होंने स्कूल की पढ़ाई की। 1877 अपने परिवार के साथ रायपुर चले गए फिर एक साल बाद 1877 में अपने घर या गए। कलकत्ता के प्रसिडेंसी कॉलेज के परवेश परीक्षा में प्रथम डिविजन से पास होने वाला एक मात्रछात्र थे। कॉलेज के समय स्कूल में हो रहे खेल कूद प्रतियोगिता में भाग लेते थे।

उन्होंने दर्शनसास्त्र धर्म सामाजिक विज्ञान इतिहास काला और साहित्य जैसे विषयों की शिक्षा प्राप्त कि थी। इसके अलाव वेद उपनिषद भागवतएगीता रामायण महाभारत और कई हिंदू शास्त्रो का गहन अधियान किया। उसके बाद भारतीय शास्त्री संगीत का भी प्रशिक्षण ग्रहण किया। स्कांतिश चर्च कॉलेज असेंबली इस्टीट्यूशन से पश्चिमी तर्क पश्चिमी दर्शन और यूरोपीय इतिहास अध्ययन किया। 1884 में उन्हे काला स्नातक की डिग्री प्राप्त की। 1860 में उन्होंने स्पेंसर का किताब एजुकेशन को बंगाली में अनुवाद किया। उसके बाद उन्होंने 1984 में ग्रेजुएशन की डिग्री प्राप्त की। महासभा सस्थां के प्रधाना अध्यापक ने लिखा नरेंद्र सच में एक बहुत बुद्धिमान वेक्ति हैं। इसलिए उन्हें श्रुतिधर भी कहा जाता था। जिसका अर्थ है विलक्षण स्मृति वाला व्यक्ति होता है।

**स्वामी विवेकानंद की शिक्षा की अवधारणा:**

विवेकानंद ने शिक्षा को मनुष्य में पहलेसे ही पूर्णता की अभिव्यक्ति के रूप में परिभाषित किया। वह स्वाध्याय में विश्वास करते थे। शिक्षक केवल छात्र को प्रेरित या प्रोत्साहित करता है और उसके भीतर पहले से मौजूद ज्ञान के छिपे हुए खजाने को खोजने में उसकी मदद करता है। स्वामी विवेकानंद ने महसूस किया कि जीवन के वैज्ञानिक और यांत्रिक तरीके पर अत्यधिक जोर मनुष्य को मशीन की स्थिति में तेजी से कम कर रहा है। नैतिक और धार्मिक मूल्यों की अवहेलना की जा रही है और सभ्यता के मूलभूत सिद्धांतों की उपेक्षा की जा रही है। स्वामी विवेकानंद शिक्षा के माध्यम से इन सभी सामाजिक और वैश्विक बुराइयों का समाधान चाहते हैं। विवेकानंद के अनुसार शिक्षा मनुष्य में पहले से ही पूर्णता की अभिव्यक्ति है। जैसे अग्नि चकमक के टुकड़े मे है उसी प्रकार ज्ञान मन में विद्यमान है। वह स्वाध्याय में विश्वास करते थे। उनका माना था कि

शिक्षक केवल छात्र को प्रेरित या प्रोत्साहित करता है और उसके भीतर पहले से मौजूद ज्ञान के छिपे हुए खजाने को खोजने में उसकी मदद करता है। अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा ही वह है जो मनुष्य में छिपी सभी शक्तियों को प्रकट करे। वास्तविक शिक्षा के लिए मानवता की भावना की आवश्यकता होती है। जो मनुष्य के चरित्र का आधार है। और संतुलित व्यक्तित्व की सच्ची निशानी है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को अनुकूलन क्षमता विकसित करनी चाहिए और बदलते समाज की चुनौती का सामना करने में सक्षम होना चाहिए। उन होने कहा है कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बालक का शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक विकास हो। स्वामी विवेकानंद सार्वभौमिक शिक्षा के प्रणेता थे। उन होने कहा कि शिक्षा को भाईचारे की भावना और मानव जाति की एकता की ओर ले जाना चाहिए। जनता की सेवा करना ईश्वर की सेवा करना है। शिक्षा हमें इसे पहचानने और इस अंत को पूरा करने के लिए प्रेरित करे।

**शिक्षा का उद्देश्य:**

शिक्षा को किताबी ज्ञान भूमिका सीखना या छात्रों के दिमाग में ढेर सारी जानकारी भरना नहीं होना चाहिए। हमारे पास इस तरह की शिक्षा होनी चाहिए जो जीवन-निर्माण मानव-निर्माण विचारों का चरित्र निर्माण करने वाली और व्यक्ति के सर्वांगीण विकास करने वाली हो। उनके लिए शिक्षा का अर्थ वह प्रक्रिया है जिससे चरित्र का निर्माण होता है। मन की शक्ति बढ़ती है और बुद्धि तेज होती है। जिसके फलस्वरूप व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। विवेकानंद के अनुसार शिक्षा सौंदर्यशास्त्र या ललित कला के शिक्षण के बिना अधूरी है।

भारत में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य आत्मनिर्भरता का लक्ष्य है। व्यक्ति को पारंपरिक धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों के साथ व्यावहारिक और शब्दावली प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। विवेकानंद शिक्षा को हर तरह से स्वावलंबी बनाना चाहते थे। देश के आर्थिक विकास के लिए पश्चिमी प्रौद्योगिकी और इंजीनियरिंग को स्कूलों और कॉलेजों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। प्रत्येक बच्चे के लिए व्यावसायिक विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। लड़कियों के लिए पाठ्यक्रम में पाक कलाए सुई-शिल्प बाल-पालन अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान शामिल होना चाहिए।

यह सत्य है कि विद्यार्थी को जीवन में संघर्ष के योग्य बनना पड़ता है। साथ ही उसे उच्च चरित्र धारण करने परोपकार की भावना विकसित करने ईमानदारी कर्तव्यपरायणता जिम्मेदारी आदि के गुणों का प्रयोग करने की आवश्यकता के बारे में जागरूक होना चाहिए। एक छात्र पेशे में एक उच्च पद पर आसीन हो सकता है लेकिन क्या उसे एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में ऊपर उठाया जा सकता है जिसे वह अपने देश और अपने लोगों के लिए प्यार कर सके। हमारा देश जिस शिक्षा प्रणाली को पालन और पोषित करता है केवल सूचना देने वाली शिक्षा प्रणाली मनुष्य में महान गुणों को

सुधारने में कभी भी विजयी नहीं हो सकती है। एक विद्यार्थी को सदाचारी दोषरहित ईमानदार सम्माननीय न्यायप्रिय सदाचारी बनाने में शिक्षक की भूमिका सबसे उल्लेखनीय है। विवेकानंद का मानना है कि शिक्षक को छात्रों के मार्गदर्शक दार्शनिक और मित्र उनके चरित्र के कुशल निर्माता उनके दिमाग के अनुभवी प्रशिक्षक उनकी बुद्धि के गंभीर विकासकर्ता और उनके ज्ञान के शुद्ध प्रवर्तक के रूप में कार्य करना चाहिए। एक छात्र पश्चिमी विज्ञान सीख सकता है लेकिन वह वेदांत के सार और दर्शन को भी कंठस्थ करता है। पूर्ण ब्रह्मचर्य का अभ्यास करता है और आत्मविश्वास के साथ दूसरों को और स्वयं को सम्मान देने की आदत विकसित करता है।

**स्वामी विवेकानंद ने निम्नलिखित को प्रमुख शैक्षिक लक्ष्यों के रूप में सूचीबद्ध किया:**

**अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति:** मानव पूर्णता का विकास शिक्षा के लिए विवेकानंद की सर्वाच्च प्राथमिकता है।

**मानव.निर्माण करना:** स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य मनुष्य का निर्माण करना है। मनुष्य का निर्माण शिक्षा से होता है वे कहते हैं। मनुष्य की उन्नति सभी शोधों का अंतिम उद्देश्य है।

**शारीरिक पूर्णता:**विवेकानंद का मानना था कि मनुष्य तभी पूर्णता प्राप्त कर सकता है जब उसका शरीर अच्छा स्वास्थ्य में हो। पूर्णता प्राप्त करने में सबसे बड़ी बाधा शारीरिक दुर्बलता है।

**चरित्र का निर्माण:**स्वामी विवेकानंद का मानना था कि शिक्षा व्यक्ति को अपने चरित्र को विकसित करने में मदद कर सकती है। उनका मानना है कि एक सफल देश के विकास के लिए मजबूत नागरिकता की आवश्यकता होती है।

**जीवन-संघर्ष की तैयारी:**छात्रों की शिक्षा उन्हें उनके भविष्य के लिए तैयार करती है। विवेकानंद के अनुसार जीवन की चुनौतियों की तैयारी के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक शिक्षा आवश्यक है।

**राष्ट्रीयता की भावना का विकास:**भारत के दुख ने विवेकानंद को आंसू बहाए। उन्होंने शिक्षा की एक ऐसी प्रणाली बनाने का लक्ष्य रखा जो भारत में छात्रों को देशभक्ति की भावना के लिए प्रोत्साहित करे।

**स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार:**

**मानसिक एवं बौद्धिक विकास:** उस व्यक्ति के बौद्धिक और मानसिक विकास की डिग्री के आधार पर उन्हें यह एहसास नहीं हो सकता है कि उन्होंने कोई गतिविधि पूरी कर ली है। चाहे वह कितना भी छोटा या महत्वपूर्ण क्यों न हो। विकास की बाधाओं को स्वीकार करते हुए विकल्पों को बढ़ाने का हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए क्योंकि यह जीवन की गतिशीलता का एक सार्वजनिक नियम है। स्वामीजी ने प्रत्येक भारतीय विशेषकर बच्चों और युवा वयस्कों के बौद्धिक और मानसिक विकास से संबंधित विभिन्न विषयों पर बात की। इस वजह से बौद्धिक विकास को समकालीन दुनिया के ज्ञान-विज्ञान के परिचय के एक महत्वपूर्ण

घटक के रूप में शामिल किया गया था। स्वामीजी के अनुसार भारत की गरीबी में योगदान देने वाला मुख्य कारक बौद्धिक और मानसिक उन्नति की कमी है। बच्चों को बौद्धिक रूप से आगे बढ़ने के लिए और अपनी ऊर्जा का उपयोग खुद को समाज और देश को बनाने के लिए करने में सक्षम होने के लिए स्वामीजी सलाह देते हैं कि उन्हें कम उम्र से ही योग और ध्यान जैसी मानसिक विकास प्रथाओं का ज्ञान सिखाया जाना चाहिए।

**नैतिक एवं चारित्रिक विकास:** व्यक्ति के लक्षण चरित्र और नैतिक विकास यह निर्धारित करते हैं कि वे एक व्यक्ति के रूप में कैसे विकसित होते हैं। दूसरे शब्दों में नैतिक और चरित्र विकास हमारे द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कार्य और हमारे द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कार्य का आधार है। स्वामी विवेकानंद ने भारत में शिक्षा के लक्ष्यों में से एक के रूप में चरित्र विकास पर जोर दिया। चरित्र व्यक्ति को अपने आप में भरोसेमंद मेहनती मिलनसार और मजबूत बनाता है। भारतीय शिक्षा में अकादमिक विकास को बढ़ावा देने के अलावा उन्होंने अगली पीढ़ियों में नैतिक अखंडता स्थापित करने का भी लक्ष्य रखा। भारत के युवा देश के भविष्य के लिए एक मजबूत नैतिक नींव रखें। स्वामी विवेकानंद ने कहा आपके परिवार में कोई भी आपकी माँ पिता भाई-बहन दोस्त या पत्नी आपके द्वारा नहीं बदला जा सकता है। अब आप केवल अपने उच्च चरित्र के कारण खुद को बदल सकते हैं। अपने सहयोग और हाथों से अपना भविष्य बनाएं। हम अपनी सोच का योग हैं। बच्चों की बुराइयों को सद्गुणों में बदलने की क्षमता के साथ हमारी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करने की जरूरत है।

**शारीरिक विकास:** संसार में सब कुछ प्राप्त करने का आधार शारीरिक शक्ति है। स्वामीजी के अनुसार सभी की जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वे अपने शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखें। यह दावा किया गया है कि खुशी की बढ़ती गणना में शुरुआती खुशी और स्वस्थ शरीरष् सबसे पहले आता है। स्वामी जी अपनी शिक्षाओं में भारतीय जनता के सामने यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि स्वस्थ तन और मन साथ-साथ चलते हैं। केवल शारीरिक कौशल ही भारतीयों की पूर्व महानता को बहाल कर सकता है। उनका मत था कि बहुत सी बीमारियाँ शारीरिक दुर्बलता में शरण लेती हैं। ये सारी खामियां आदमी को कायर बना देती हैं। और अंत में समाज की कायरता व्यक्ति के साथ विलीन हो जाती है। वह यह कहते हुए कायरता का परिचय देते हैं। ऐसी खामियां अभी हाल ही में हमसे जुड़ी हैं और हमारी जाति को असहाय बना सकती हैं। ऐसा लगता है कि पिछले एक हजार वर्षों से हमारे जातीय अस्तित्व का एकमात्र ध्यान इस बात पर रहा है कि हम उत्तरोत्तर कमजोर कैसे हो सकते हैं। इस समय जो हमें कुचलना चाहता है वह वास्तव में केंचुओं की तरह हो गया है जो सभी के पैरों के करीब फिसल रहा है। हमारे अपने कार्यों के कारण हमारा देश इस स्थिति में पहुंच गया है। मजबूत शरीर और शक्तिशाली इच्छाशक्ति वाले युवा साथ ही साथ उनके शरीर में मजबूत मांसपेशियों और मजबूत नसों वाले युवा इसे दूर करने के लिए आवश्यक हैं।

उन्होंने कहा हमें लोहे के भंडार और स्टील की नसों की आवश्यकता है न कि तुच्छ विचार जो कमजोरी का कारण बनते हैं। हमें रक्त में गति और नसों में शक्ति चाहिए।

**समाजसेवा की भावना का विकास :** स्वामीजी के अनुसार शिक्षा वह है जो व्यक्ति को समाज या देश के लाभ के लिए अपनी शिक्षा का उपयोग करने की अनुमति देती है। उन्होंने शिक्षितों से समाज के वंचित सदस्यों की सहायता करने उन्हें जगाने और उनके उत्थान के लिए काम करने की कामना की। उन्होंने कहा कि भारत के निम्न वर्ग के नागरिकों का उत्थान ही देश को वास्तव में आगे बढ़ाने का एकमात्र तरीका होगा। उन्होंने केवल मानवता के कर्तव्य को भगवान की भक्ति के रूप में देखा। कोई भी देश महान इसलिए बनता है क्योंकि उसकी शिक्षित जनता वहां व्याप्त सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए कटिबद्ध होती है।

**नारी शिक्षा का विकास:** स्वामी विवेकानंद के अनुसार महिलाएं सीता की पवित्रता और उच्च आकांक्षाओं की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति हैं। उनके विचारों ने उस दौर में समाज में कर्षण प्राप्त किया जब भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति भयावह थी। महिलाओं की दयनीय स्थिति का एकमात्र और एकमात्र कारण स्वामी जी को शिक्षा का संकीर्ण वितरण माना जाता है। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा को लड़कों केबराबर रखने की वकालत की है। महिलाओं को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जो उन्हें सबसे कठिन परिस्थितियों में भी स्वतंत्र होने और मन की शांति बनाए रखने में सक्षम बनाती है। उन्हें इतिहास पौराणिक कथाओं घरेलू विज्ञान ललित कला और परिवार विज्ञान में एक मजबूत शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। महिलाओं की शिक्षा में धर्म आत्मरक्षा योग ध्यान संतान पालन साहस आदि के पाठों को प्राथमिकता दी गई। उनका तर्क है कि ईश्वरीय बुद्धिमान और बहादुर माताओं से पैदा हुए बच्चे अपने कार्यों से अपने देश को गौरवान्वित करते हैं। उच्च सभ्यता संस्कृति और ज्ञान के परिणामस्वरूप देश में उन्नति होगी।

**व्यावसायिक शिक्षा का विकास:** स्वामीजी के जन्म के समय भारत भुखमरी गरीबी और शक्तिहीनता सहित कई मुद्दों से जूझ रहा था। अंग्रेजों के शोषण और गुलामी के बंधनों ने सबको घेर लिया। यह देखकर कि भारत एक गुलाम था स्वामीजी ने भारत को स्वतंत्र करने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने उन राष्ट्रों का भी अवलोकन किया जो इसके विपरीत समृद्ध जीवन व्यतीत कर रहे थे। उन कारणों का अवलोकन किया जिनके पीछे विज्ञान शिक्षा नवाचार और प्रौद्योगिकी की उन्नति का इतिहास था। इस वजह से उन्होंने स्कूल में केवल आध्यात्मिकता रखने के लिए पर्याप्त सोचने के बजाय शिक्षा के माध्यम से शिक्षा के माध्यम से उद्योग और अन्य व्यवसायों में प्रशिक्षण को विलय करने पर बहुत ध्यान दिया।

**धार्मिक तथा आत्मिक शक्ति का विकास:** धर्म की नींव पर स्वामी विवेकानंद के विचार अत्यधिक विविध थे। उनका दावा है कि धर्म वह है जो हमें प्रेम का मूल्य देता है और हमें पूर्वाग्रह और घृणा से बचाता है। धर्म

को दूसरों का फायदा उठाए बिना समानता को बढ़ावा देना चाहिए। समाज के प्रत्येक सदस्य को धार्मिक शिक्षा के वातावरण में समान चयन करने में सक्षम होना चाहिए। आध्यात्मिक आधार मनुष्य के संपूर्ण विकास का आधार होना चाहिए। उनके अनुसार बच्चे को कम उम्र से ही भारतीय संस्कृति और दर्शन में शिक्षित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को अपनी आध्यात्मिक और धार्मिक शक्ति बनाने में मदद करने के लिए योग ध्यान और कर्म के शुरुआती प्रदर्शन पर विशेष ध्यान दिया गया है।

**विश्व बंधुत्व की भावना का विकास:** स्वामी विवेकानंद की शिक्षा में वसुधैव कुटुम्बकम की खेती के साथ-साथ देशभक्ति की भावना भी शामिल थी। उनकी राष्ट्रीयता सीमित नहीं लगती थी बल्कि इसमें व्यापकता की भावना थी। वह वैश्विक भाईचारे की भावना में विश्वास करते थे क्योंकि उन्होंने ब्रह्मांड को सभी लोगों में उस परम अस्तित्व को प्रतिबिंबित करने के रूप में देखा था।

**वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा के रविन्द्र नाथ टैगोर और स्वामी विवेकानंद दृष्टि की प्रासंगिकता:**

वर्तमान समय में यह सत्य है कि सम्पूर्ण विश्व की आधुनिक शिक्षा व्यवस्था यह प्रदर्शित करती है कि वह अपना लक्ष्य अपनी दिशा और अपना नैतिक चरित्र खो चुकी है। मन-शरीर और आत्मा के सामंजस्यपूर्ण विकास द्वारा मनुष्य को पूर्ण बनाने के बजाय यह केवल पैसा बनाने वाली मशीनों का उत्पादन करता है। आधुनिक युवा भले ही तकनीकी रूप से मजबूत हैं लेकिन आध्यात्मिक रूप से दिवालिया हैं। यद्यपि हमारा देश वैज्ञानिक आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में विकास कर रहा है। फिर भी बड़ी संख्या में लोग गरीबी से पीड़ित हैं और जानवरों की तरह जीवन व्यतीत कर रहे हैं। लोगों का एक बड़ा समूह गरीब जनता का शोषण कर रहा है। भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया है।

अधिकांश छात्र आज अपने व्यक्तिगत लाभ यानी पैसा कमाना सत्ता हथियाना और गैर-नैतिक आनंद लेने की तुलना में शिक्षा के उच्चतम लक्ष्य में कम रुचि रखते हैं। उनके सलाहकार के रूप में अभिभावक और शिक्षक अक्सर अपने बच्चों और छात्रों को बेचैन करने वाली कड़ी प्रतिस्पर्धा के माध्यम से स्वार्थी विचार स्वार्थ और खुद की सफलता के लिए प्रेरित करते हैं। इस तरह उन्होंने अपने बच्चों और छात्रों को धीरे-धीरे व्यक्तिगत लाभ के साथ बहुत सारा पैसा कमाने के लिए मशीन बना दिया। इस कारण से हम अपने कर्तव्यों का पालन करने में सेवा की भावना प्रा करने में विफल रहे हैं। नतीजतन हमें दूसरों के लिए कोई सहानुभूति नहीं है अन्य कर्तव्यों या हमारे सुधार के लिए कोई ज़िम्मेदारी नहीं है यहां तक कि हमें अपने सेवा क्षेत्रों में काम की गुणवत्ता के बारे में कोई जागरूकता नहीं है। अफसोस की बात है कि यह महज एक यांत्रिक जीवन है। शिक्षा के उच्च मूल्यों के साथ कोई मानवता नहीं है।

रवींद्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानंद ने भारत में अंग्रेजों द्वारा शुरू की गई शिक्षा पद्धति की

कड़ी आलोचना की थी। उन्होंने भारत में शिक्षा की ब्रिटिश प्रणाली को लागू करने के खिलाफ विद्रोह किया। उन्होंने महसूस किया कि ऐसी शिक्षा भारत की संस्कृति के अनुरूप नहीं हो सकती है। समकालीन शिक्षा प्रणाली के खिलाफ विवेकानंद द्वारा उठाई गई मुख्य आपत्ति यह थी कि यह पुरुषों को गुलामों में बदल देता है। यह शिक्षा गुलामी के लिए सक्षम है और कुछ नहीं। टैगोर भारत में पश्चिमी शिक्षण संस्थानों की नकल करने वाली सामग्री भवन फर्नीचर या पुस्तकों पर जोर देने के भी खिलाफ थे। उसने सोचना था कि इससे आम लोगों के लिए शिक्षा बहुत महंगी हो जाएगी। टैगोर और विवेकानंद दोनों ही किताबी ज्ञान के खिलाफ थे।

**निम्नलिखित कारणों को सच्ची शिक्षा की विफलता के कारणों के रूप में माना जा सकता है:-**

- समग्र और दीर्घकालिक दृष्टि का अभाव अर्थात आध्यात्मिकता का अभाव।
- मूल्य आधारित शिक्षा का अभाव।
- मन की एकाग्रता की शक्ति का विकास न होना।
- वाममस्तिष्क उन्मुख शिक्षा के अभ्यास के. कारण।
- शिक्षक और छात्र के बीच व्यक्तिगत संपर्क का अभाव।

भारत ने विश्व की समस्याओं पर गहन चिंतन किया है और अपनी बुद्धिमता से उन्हें हल करने का प्रयास किया है। जिस प्रकार की शिक्षा देश के मन को सत्य की प्राप्ति कराती है और उसे अपनी शक्ति से अभिव्यक्त करती है। वही हमारे देश की सच्ची शिक्षा है। रटकर सीखना मन या हृदय को आकर्षित नहीं करता इसे मशीन से भी किया जा सकता है।

**निष्कर्ष:**

सभी देशों में शिक्षा जीवन की मुख्य धारा से जुड़ी हुई है। हमारे देश में हमारी आधुनिक शिक्षा केवल कुछ व्यवसायों और सेवाओं से सीधे जुड़ी हुई है। जो शिक्षित मध्य वर्ग जैसे कि क्लर्क वकील डॉक्टर डिप्टी मजिस्ट्रेटए सब-इंस्पेक्टर या पुलिस के सहायक उफ निरीक्षक मुंसि आदि हैं। यह किसानों कुम्हारों या तेलियों से बहुत दूर है। ऐसी आपदा किसी अन्य शिक्षित देश में कभी नहीं देखी गई। इसका कारण यह है कि हमारे नए विश्वविद्यालय जमीन की मिट्टी में जड़ जमाए हुए नहीं हैं। परजीवियों की तरह बड़े-बड़े पराई वृक्षों की डालियों से लटक रहे हैं। यदि भारत में कभी एक सच्चा विश्वविद्यालय स्थापित किया जाता है तो वह अपने परिसर के आस-पास के गाँवों में अपने अर्थशास्त्र कृषि विज्ञान चिकित्सा और स्वास्थ्य देखभाल और इसके अन्य सभी व्यावहारिक विज्ञानों के फल को लागू करके देश के जीवन में गौरव का स्थान लेगा। ऐसा विश्वविद्यालय कृषि पशु-प्रजनन और बुनाई में सर्वात्तम प्रथाओं का अनुकरण करेगा। और पर्याप्त धन उत्पन्न करने के लिए यह सहकारी तरीकों को अपनाएगा और अपने शिक्षकों छात्रों और आस-पड़ोस में रहने वाले

लोगों को आजीविका उत्पन्न करने के क्षेत्र में निकटता से जोड़ देगा।

''विश्वभारती'' टैगोर के शिक्षा के मॉडल का सबसे अच्छा उदाहरण है। उनके लिए केवल सामंजस्यपूर्ण विकास ही उचित विकास सुनिश्चित करता है और पूर्ण आनंद की ओर ले जाताहै। टैगोर का प्रभाव भारत में शिक्षा पर कोठारी आयोग की रिपोर्ट में भी देखा जा सकता है। उनके विचार में शिक्षा का उच्च उद्देश्य वही है जो व्यक्ति के जीवन का है जो पूर्णता और सार प्राप्त करना है। हालांकि टैगोर और विवेकानंद की शिक्षा की दृष्टि एक सदी से भी पहले की है। लेकिन यह अभी भी प्रासंगिक है।

महान राष्ट्रवादी और देशभक्त स्वामी विवेकानंद। उन्होंने अपने व्याख्यानों और लेखन विशेषकर युवा पीढ़ी के माध्यम से भारत के युवा लोगों में आत्मविश्वास आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास को प्रोत्साहित किया। उन्होंने भारतीय संस्कृति के निर्माण में भी मदद की। उन्होंने उत्कृष्ट विचारों के साथ-साथ विदेशी ज्ञान और विज्ञान को शामिल करने पर जोर दिया। उनके सोचने का तरीका पूरी युवा पीढ़ी को गर्व के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। वह अब हमारे बीच शारीरिक रूप से रहकर और अपने आध्यात्मिक ज्ञान और स्फूर्तिदायक विचारों को साझा करके देश को निर्देशित कर रहे हैं।

अपने काम और उपलब्धियों से रवींद्रनाथ टैगोर दुनिया भर में अभिनव शिक्षकों के नेटवर्क में शामिल हो गए जिनमें रूसो पेस्टलोज़ी फ्रोबेल मोंटेसरी डेवी और हाल ही में मैल्कम नोल्स शामिल हैं। हालांकि टैगोर भारत के राष्ट्रीय गीत के लेखक अपनी मातृभूमि के एक शानदार राजदूत हैं। वे दुनिया के एक सच्चे व्यक्ति भी हैं जो पारंपरिक भारतीय और समकालीन पश्चिमी संस्कृतियों दोनों के बेहतरीन पहलुओं का प्रतीक हैं। प्रकृति संगीत और दैनिक जीवन के माध्यम से सीखना टैगोर के शैक्षिक दर्शन के केंद्र में था। अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उन्होंने शांतिनिकेतन की स्थापना की। यही कारण है कि मानव मन केवल अपने ज्ञान को आत्मसात करने में सक्षम है। कई व्यक्तित्व लक्षणों के महत्व और व्यावहारिक महत्व का टैगोर द्वारा विस्तार किया गया था।

**संदर्भ सूची:**


1. बनर्जी ज्योति प्रसाद;''एजुकेशन इन इंडिया पास्ट प्रेजेंट फ्यूचर''; एस एम एस ओहौधुरी; 1;1958
2. चौबे एस पी एवं चौबे ए; '' एजुकेशन इन अन्सिएंट एंड मिडिवल इंडिया''; विकास पब्लिशिंग हाउस;1999
3. घोष नित्यप्रिया;''रबीन्द्रनाथ टैगोर ए : पिक्टोरियल बायोग्राफी''; नियोगी बुक्स; 2011
4. शांति जी;''एजुकेशनल थिंकर्सरबीन्द्रनाथ - टैगोर''; अधिकारीक वेसाइडः - https://epgp.inflibnet.ac.in/epgpdata/uploads/epgp_content/S000033S

O/P000300/M015159/ET/146043432717ET.pdf

5. चक्रबर्ती मोहित;''फिलोसोफी ऑफ़ एजुकेशन ऑफ़ रबीन्द्रनाथ टैगोर ए - क्रिटिकल इवैल्यूएशन''; अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स;1988
6. सराफ नंदिनी; '' द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ़ स्वामी विवेकानंद''; प्रभात प्रकाशन;2020
7. भरतभाई जोशी ऋषि; '' व्यूज ऑफ़ स्वामी विवेकानंद फॉर ए बेटर पैरामीटर ऑफ़ ह्यूमन लाइफ '';2;8द्ध;2013
8. सरकार रतन ;'' स्वामी विवेकनन्दास आइडियाज एंड फिलॉसोफी ऑफ़ एजुकेशन ए वे आउट टू प्रमोट -इम्पेरिशबले डेवलपमेंट ऑफ़ दा नेशन''; क्वार्टरली रिसर्च जर्नल; 1;4द्धए2015
9. सिरस्वाल देश राज;''फिलोसोफी ऑफ़ स्वामी विवेकानंद'' सी पी पी आई एस पेहोवा; 2013
10. चंद्रा सुभाष और खटुआ आलोक रंजन ;''फिलोसोफिकल पर्सपेक्टिव्स ऑफ़ रबीन्द्रनाथ टैगोर एंड स्वामी विवेकानंद ऑन एजुकेशन इन दा प्रेजेंट सिनेरियो'';2014